PSYCHOLOGY (HONOURS) PAPER-I

E-STUDY-MATERIAL FOR B.A. PART-I

BY. DR. GAJENDRA TIWARI
G.D. COLLEGE-BAGAHA
Mob.No-9693082589

Question:- संवेग की अवस्था में होनेवाले आन्तरिक परिवर्तनों का वर्णन करें।

Ans:-

आन्तरिक परिवर्तनों का निरीक्षण वाह्य रूप से नहीं किया जा सकता है। इनका निरीक्षण विशिष्ट प्रकार के यंत्रों की सहायता से ही संभव है। इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययनों से यह पता चला है कि संवेग की अवस्था में शरीर के अंदर निम्नलिखित मुख्य परिवर्तन होते हैं:-

1. साँस लेने की क्रिया में परिवर्तन,
2. हृदय की गति में परिवर्तन,
3. नाड़ी की गति में परिवर्तन,
4. रक्त-सम्बन्धी परिवर्तन,
5. रस-पाक में परिवर्तन,
6. त्वक् प्रतिक्रिया एवं मस्तिष्क-तरंग में परिवर्तन,
7. ग्रंथियों की क्रियाओं में परिवर्तन,
8. अन्यान्य परिवर्तन।

इन सभी आन्तरिक परिवर्तनों को निम्नलिखित रूप में वर्णन किया जा सकता है:-

1. साँस की गति में परिवर्तन (Changes in respiration):-

सामान्य अवस्था में साँस लेने की गति का अनुपात 1:4 रहता है, लेकिन संवेग की अवस्था में यह अनुपात सामान्य से कम या अधिक हो जाता है। साँस लेने की गति का धीमा या तेज होना विशेष प्रकार के संवेग की अवस्था-स्वरूप एवं तीव्रता पर निर्भर करता है। साँस की गति में होनेवाले परिवर्तनों को न्यूमोग्राफ (Pneumograph) नामक यंत्र की सहायता से मापा जाता है।

इस यंत्र द्वारा प्राणी के साँस लेने और छोड़ने की गति, गहराई आदि का एक ग्राफ तैयार होता है, जिसे मापकर साँस की गति में होनेवाले परिवर्तनों को जाना जाता है।

(2) हृदय की गति में परिवर्तन (changes in the heart-beat):-
साँस लेने की क्रिया और हृदय की क्रिया में गहरा सम्बन्ध है। अतः जब किसी संवेगात्मक अवस्था में साँस की गति मे परिवर्तन होता है तब उसके साथ-साथ हृदय की गति में भी परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन को इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम (electrocardiogram) नामक यंत्र द्वारा मापा जाता है। प्रायः यह देखा जाता है कि क्रोध की अवस्था में हृदय की गति सामान्य से बहुत अधिक बढ़ जाती है। भय की अवस्था में भी हृदय की गति बढ़ती हुई देखी जाती है। लेकिन कभी-कभी इसकी गति धीमी या रुक जाने जैसी भी हो जाती है।

(3) नाड़ी की गति में परिवर्तन (changes in pulse-rate):-
हृदय की गति के साथ नाड़ी की गति का गहरा संबंध है। अतः संवेग की अवस्था में हृदय की गति में परिवर्तन होने के फलस्वरूप नाड़ी की गति में परिवर्तन का होना स्वभाविक ही है। संवेग की अवस्था में नाड़ी की गति भी सामान्य अवस्था की अपेक्षा हृदय की गति के अनुरूप ही कम या अधिक हो जाती है।

(4) रक्त-संबंधी परिवर्तन (changes in blood):-
संवेग की अवस्था में रक्त संचालन में परिवर्तन, रक्त-चाप में परिवर्तन तथा रक्त के रासायनिक तत्वों में परिवर्तन होते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि क्रोध की अवस्था में रक्त-संचालन की गति एवं रक्तचाप दोनों बढ़ जाते हैं। ऐसी ही बात प्रेम के संवेग में भी पायी जाती है। लेकिन भय की अवस्था में रक्त संचालन की गति एवं रक्तचाप दोनों ~~बढ़ जाते हैं~~ की गति धीमी पड़ जाती है। इन परिवर्तनों को हम स्फिग्मोमैनोमीटर (Sphygmomanometer) नामक यंत्र से मापते हैं। इनके अतिरिक्त रक्त के रासायनिक तत्वों के अनुपात में भी परिवर्तन होते हैं, जिसे रक्त की जाँच करके जाना जा सकता है। इन परिवर्तनों को नैदानिक रूप से डॉक्टरी आला, जिसे स्टेथोस्कोप कहते हैं, द्वारा भी जाना जा सकता है।